

## आधुनिक समाज में बढ़ता पारिवारिक तनाव

प्रमोद कुमार शर्मा

प्रोफेसर, अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, सेठ फूलचन्द बागला (पी.जी.) कॉलेज, हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत

### सारांश

मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाने में परिवार की भूमिका अहम है परिवार में रहकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास करता है और समाज में रहकर वह सहयोग, सामंजस्य, प्रेम आदि की भावना उत्पन्न करता है परिवार में व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक संस्कारों को ग्रहण करता है।

आधुनिक युग में भौतिकवाद के कारण मनुष्य सुख एवं शक्ति के स्थान पर तनाव में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। एक दूसरे पर निर्भर न रहने के कारण परिवार में छोटी-छोटी बातों को लेकर वैमनस्यता हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप आत्महत्या, विवाह विच्छेद आदि जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं आज परिवार का वातावरण दूषित हो गया है। वे अनुकूलन करने में रुचि नहीं दिखाते हैं। आज विपरीत जीवन दर्शन होने से परिवार में तनाव बढ़ता जा रहा है परिवार में नए वैवाहिक जोड़े स्वतंत्र जीवन यापन करना चाहते हैं। यह समस्या शिक्षित समाज में देखने को अत्यधिक मिलती है मनोवैज्ञानिक कारण भी परिवार में तनाव उत्पन्न करते हैं। नई पीढ़ियों के सदस्यों एवं पुरानी पीढ़ियों के सदस्यों के विचारों में भी भिन्नता देखने को मिलती है।

पुराने पीढ़ी के लोग अपनी परंपरागत रीति रिवाज मान्यताओं, प्रथाओं को ही मानते हैं लेकिन नई पीढ़ी के लोग इन्हें स्वीकार करना नहीं चाहते हैं।

पारिवारिक तनाव के लिए व्यक्तिगत कारण भी उत्तरदायी होते हैं व्यक्ति एक दूसरे को शक के दायरे में देखते हैं असंतुष्ट इच्छाएँ भी इसका कारण बनती हैं।

दहेज प्रथा ने भी आज पारिवारिक तनाव को बढ़ावा दिया है जहां व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जाता है वहां तनाव की स्थिति आ जाती है। जिस परिवार में लड़की के माता-पिता का हस्तक्षेप शुरू हो जाता है वहीं अशांति उत्पन्न हो जाती है। जिसके कारण महिलाएं आत्महत्या जैसे कदम उठा लेती हैं तथा पुरुष नशा के आदी हो जाते हैं जिससे परिवार में लड़ाई झगड़े होते रहते हैं।

पारिवारिक तनाव का प्रभाव समाज में पड़ता है जो समाज उन्नति करना चाहता है लेकिन तनाव के कारण उसकी सुख समृद्धि रुक जाती है। राष्ट्रीय संकट भी उत्पन्न हो जाता है।

पारिवारिक तनाव को दूर करने के लिए हमें नैतिक आचरण अपनाना होगा भौतिक मूल्यों को छोड़ना होगा। परिवार में विवाह करते समय बच्चों की रुचियां को ध्यान में रखना चाहिए जिससे पारिवारिक विघटन जैसी स्थिति पैदा न हो सके।

**मूलशब्द:** आधुनिक समाज, भौतिकवाद, नैतिक आचरण, परंपरागत

किसी भी समाज की संरचना को समझने से पहले परिवार व्यवस्था को समझना आवश्यक है। पारिवारिक संरचना में यदि कोई बदलाव आता है तो समाज की संरचना में आना स्वाभाविक है। आज आधुनिकीकरण ने पारिवारिक तनाव को पनपाया है, नवीन परिस्थितियों में समाज की विभिन्न नियमित इकाइयों में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है। धर्म, जाति, रीति रिवाज, कला, विश्वास, परंपरा, मान्यता आदि सभी में बदलाव देखने को मिल रहा है। परिवार चूंकि समाज की प्राथमिक एवं आधारभूत इकाई है इसलिए इसमें भी परिवर्तन होना स्वाभाविक है। नवीन परिस्थितियों के साथ परिवार में अनुकूलन करने का प्रयास किया है, किंतु परिवर्तन की तीव्रता के कारण यह प्रयास सफल नहीं हो पा रहा है। इस असफल प्रयास के परिणामस्वरूप ही पारिवारिक तनाव आधुनिक युग की नवीन परिस्थितियों द्वारा उत्पन्न की हुई परिवार की असंतुलित व्यवस्था है।

परिवार समाज का मेरुदंड है जिसके सहारे समाज का ढांचा खड़ा होता है प्राणीशास्त्री प्राणी को सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित करने में जिन एकाधिक कारणों का हाथ रहता है परिवार उनमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। समाज के विकास के लिए सहयोग, सामंजस्य, प्रेम, सौहार्द, की आवश्यकता होती है उसकी प्रथम पाठशाला परिवार ही है जो अपने सदस्यों में असीमित उत्तरदायित्व एवं कर्तव्यबोध जैसे मानवीय गुणों का विकास करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

परिवार के महत्व को स्पष्ट करते हुए एंडरसन ने कहा है कि "परिवार का एक रूप वह है जिसमें हम जन्म लेते हैं दूसरा रूप

वह है जिसमें हम बच्चों को जन्म देते हैं"।<sup>1</sup> परिवार का महत्व इसी तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि हम में से कोई व्यक्ति नहीं जो परिवार के इन दोनों रूपों में से किसी का भी सदस्य न हो। विज्ञान के वर्तमान युग में मनुष्य ने आश्चर्यजनक वस्तुओं का आविष्कार किया लेकिन इस तथ्य का शायद ही कोई अपवाद हो कि परिवार का निर्माण आज भी मनुष्यों की सबसे बड़ी खोजों में से एक है लेकिन आज हम परिवारों में परंपरागत सहयोग, प्रेम, सौहार्द का अभाव देख रहे हैं बदलते हुए सामाजिक मूल्य ने परिवार के वातावरण को भी अछूता नहीं छोड़ा है।

परिवार आधुनिक युग में सुख और शांति के स्थान न रहकर तनाव व झगड़ों के भंडार बन गए हैं। आधुनिक युग में परिवारों में तनाव अनेक कारणों से देखने को मिलता है परिवार के सदस्यों में मानसिक वैमनस्य से ही तनाव का रेखाचित्र बनता है छोटी-छोटी बातों पर विचारों में विरोध उत्पन्न हो जाता है, वह चाहे किसी भी कारण से रहा हो लंबे समय के बाद हृदय में जड़ पकड़ लेता है परिवार के सदस्य एक दूसरे के प्रति अनिच्छा प्रकट करने लगते हैं और आगे चलकर यह स्थिति गंभीर हो जाती है। तनाव कभी हृदयों में रात में छिपी चिंगारी के समान बहुत समय तक सुलगते रहते हैं तथा कभी-कभी कोई विशेष घटना रूपी वायु चल जाने से यह तनाव की चिंगारी झगड़े के रूप में परिवर्तित हो जाती है और परिवार में कलह पति-पत्नी के बीच मारपीट, आत्महत्या, घर छोड़ने, वैवाहिक विच्छेद आदि की स्थिति पैदा हो जाती है। तनाव में मानसिक क्रिया ही शामिल होती है और झगड़े में शारीरिक क्रिया प्रायः तनाव झगड़े वर्तमान

समाज में घर-घर देखे जा सकते हैं। वे परिवार तो स्वर्ग कहे जाते थे लेकिन आज कलह के कारण नरक बन गये हैं, परिवार का वातावरण दूषित हो गया है। उठती हुई नई पीढ़ी इसी दूषित वायु में सांस ले रही है उनमें दोषपूर्ण इच्छा व स्वार्थ पनप रहे हैं इस स्थिति की गहराई में जाने से विदित होता है कि भारत भी पाश्चात्य परिवारों की भांति स्वार्थी परिवार वाला देश हो जाएगा। एक दूसरे के लिए किया हुआ त्याग कहानी और कविता की विषयवस्तुयें रह जाएंगी। आज के भौतिकवादी मूल्यों ने हमें सैद्धांतिक ज्ञान और आलोचना शक्ति अवश्य ही दी है परंतु सामाजिक जीवन के स्थायित्व के लिए जो प्रेम, त्याग, सहयोग, सहिष्णुता और कर्तव्य-पालन जैसे गुणों की आवश्यकता है जिन्हें विकसित करने का श्रेय केवल परिवारों को ही है किंतु क्या वास्तव में व्यावहारिक रूप में परिवार इस गौरवपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने में आजसमर्थ हो रहा है, शायद नहीं।

**पारिवारिक तनाव के कारण-** परिवार जीवन की एक विधि है जिसमें निरंतर प्रयत्नशीलता होती है इसी प्रयत्नशीलता के कारण अनुकूलन संभव होता है यह प्रयत्नशीलता तभी उत्पन्न हो सकती है जबकि परिवार के सभी सदस्य विशेष कर पति-पत्नी के व्यक्तित्व में अनुकूलन करने के लिए आवश्यक गुण हों।

**जीवन का विपरीत दर्शन-** प्रत्येक व्यक्ति का जीवन दर्शन उसके जीवन को प्रेरित एवं निर्देशित करता है। जब पति-पत्नी के जीवन दर्शन एक दूसरे से अत्यंत भिन्न होते हैं तो पारिवारिक तनाव अनिवार्य हो जाता है प्रत्येक व्यक्ति के लक्ष्य, उद्देश्य एवं उन्हें प्राप्त करने के साधन अलग-अलग होते हैं। जब तक इन कार्यों की पूर्ति संयोग से होती है जब तक परिवार अपने सदस्यों को सुख शांति प्रदान करता रहता है और जब इस प्रकार के सहयोग का अभाव उनके विपरीत जीवन दर्शन के कारण हो जाता है तो परिवार तनावग्रस्त हो जाता है। यह विपरीत जीवन दर्शन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में पाया जाता है आर्थिक मामलों में भिन्नता के कारण पिता-पुत्र, भाई-भाई, पति-पत्नी में तनाव देखा जा सकता है। परिवार में किसी व्यक्ति की इच्छा धन जोड़ने की, स्त्री को आभूषणों की, फिजूल खर्ची, छोटा व्यवसाय, स्त्री का काम करना या विवाह के बाद किसी कारण नौकरी छोड़कर घर के काम करना आदि तनाव पैदा करते हैं। इस प्रकार की स्थिति समाज के मध्यम वर्गीय परिवारों में विशेषतः पाई जाती है। जो परिवार में तनाव पैदा करती है हमारे समाज में धर्म का विशेष स्थान है धार्मिक मामलों में स्त्रियों की आस्था पुरुषों से अधिक होने से विपरीत दृष्टिकोण के पनपने से तनाव का आधार परिवार में पैदा हो जाता है।

**दृष्टिकोण में परिवर्तन-** बदलती सामाजिक परिस्थितियों ने व्यक्तियों के दृष्टिकोण को बदला है आज हमारे दृष्टिकोण सामाजिक संस्थाओं के प्रति वे नहीं रहे जो भारतीय समाज के मूल आधार माने जाते थे। विवाह जाति धर्म आदि के संबंधों में आज की पीढ़ी के दृष्टिकोण बिल्कुल ही बदल गये हैं। परिवार में शिक्षित नवयुवक व नवयुवतियां अनेक मामलों में स्वतंत्रता चाहते हैं जैसे विवाह, सामाजिक सहवास आदि के बारे में जिन परिवारों में स्त्रियां व पुरुष दोनों शिक्षित हैं वहां दृष्टिकोण में परिवर्तन तनाव का कारण उग्र रूप में नहीं है लेकिन जिन परिवारों में स्त्रियां पुरुष में से कोई भी एक अशिक्षित है वहां तनाव उग्र रूप में पाया जाता है।<sup>12</sup>

**वैवाहिक संबंध -** जब परिवार के सदस्य विशेष कर पति-पत्नी अपने संबंधों के प्रति लापरवाह हो जाते हैं जैसे पति व पत्नी से सामान्य देखभाल और सेवाओं की आशा करता है उसी प्रकार पत्नी भी आर्थिक सुरक्षा व संरक्षण की आशा करती है।<sup>13</sup>

**मनोवैज्ञानिक कारक-** मनोवैज्ञानिक कारणों से तनाव प्रायः शिक्षित परिवारों में ही अधिक देखने को मिलता है। शिक्षित व्यक्ति प्रायः अपने असंतोष को प्रकट नहीं करते और वही विचार उनके मस्तिष्क में चलता रहता है और किसी अन्य व्यवहार से प्रदर्शित होता है ऐसे विकार युक्त व्यक्तित्व के पास किसी भी पति या पत्नी का वैवाहिक अनुकूलन नहीं हो पाता और पारिवारिक जीवन विषम हो जाता है।

**नई और पुरानी पीढ़ी में विभिन्नता-** नई पीढ़ी आज भौतिकवादी मूल्यों की ओर अग्रसर हो रही है इस कारण जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप को उपयोगिता और लाभ की दृष्टि से अपनाता चाहती है जबकि परिवारों में पुरानी पीढ़ी के लोग अपनी परम्परागत रूढ़ियों से बाहर नहीं आना चाहते तथा इन परंपराओं से अलग व्यवहार को अधर्म कहते हैं इस कारण विवाह, पर्दा, संतति, विरोध, तलाक आदि मामलों में मत भिन्नता होने के कारण तनाव पैदा होता है।<sup>14</sup>

**व्यक्तिगत कारण-** कुछ पति प्रत्येक विषय में अपने व्यक्तित्व को प्रदर्शित करने के आदी शराब या जुआ के आदी होने के कारण परिवार में तनाव पैदा करते हैं। इधर पत्नी पड़ोस के परिवार में बिटाने- बैठने की आदत, दूसरों की होड़ आदि, झूठ बोलने की आदत, एक दूसरे को चरित्र संबंधी दोषारोपण आदि कारण से ही तनाव उत्पन्न हो जाता है।

**असंतुष्ट इच्छाएं-** प्रायः परिवारों में आय की कमी, व्यय की अधिकता से परिवार के सदस्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति में असमर्थ रहने से तनाव की स्थिति पैदा करते हैं क्योंकि लोग भाग्य से ज्यादा कर्म पर विश्वास करने लगे हैं।

**दहेज के कारण-** कुछ परिवारों में दहेज के अभाव में नव विवाहिता को तानों व व्यंग्य वाणों का शिकार होना पड़ता है जो पूरे परिवार में तनाव व आगे झगड़े का रूप ले लेते हैं। बहुत सी विवाहित महिला आत्महत्या कर लेती हैं जिससे पूरा परिवार तनाव में आ जाता है और जेल में रहकर अपने कृत्यों की सजा भुगतनी पड़ती है।

**सास ससुर अथवा माता-पिता का हस्तक्षेप-** व्यक्ति का स्वभाव स्वतंत्रता चाहता है, स्वतंत्रता के अभाव में उसके अंदर अनेक प्रकार की मानसिक कुंठाओं का प्रादुर्भाव होता है जो उसकी सुख शांति को निगल जाता है। घर के बड़े-बूढ़े अपने प्रभाव के प्रदर्शन हेतु या कभी-कभी अपने विगत अनुभवों के कारण परिवार की नव दंपति या अन्य सदस्यों के कामों में हस्तक्षेप करते हैं, अपना अनुभव उन्हें बताते हैं कि अन्य सदस्य अनुचित कार्य कर रहे हैं। इसी प्रकार सास बहू, नंद जेठानी-देवरानी, भाई-भाई के बिगड़ते संबंध परिवार में तनाव व झगड़ों को उत्पन्न करने में आगे में घी डालने का कार्य करते हैं।

**वर्तमान समाज में पारिवारिक तनाव का प्रभाव-** व्यक्ति परिवार और समाज का केवल निर्माता ही नहीं है बल्कि उसके स्वयं का व्यक्तित्व भी परिवार एवं समाज के द्वारा ही निर्मित व निर्देशित होता है। परिवार के क्रियाकलाप उसकी गतिविधियों को अनेकों प्रकार से प्रभावित करते हैं। व्यक्ति मानसिक क्लेश, अशांति से स्वास्थ्य खराब हो जाना आदि पाया जाता है। व्यक्ति की सहनशीलता समाप्त हो जाती है और वह परिवार को छोड़कर चले जाने आत्महत्या करने, नशे में हर समय बना रहने आदि गलत आदतों में पड़ जाना तथा समाज से विरक्त होने के लिए उद्यत हो जाता है। परिवार का अस्तित्व व्यक्तियों की सहयोगी सौहार्दपूर्ण प्रवृत्ति का ही परिणाम है जब प्रेम, त्याग और सहयोग

के स्थान पर परिवार में स्वार्थ, वैमनस्यता, तनाव, झगड़ों का बोल-वाला होता है तो ऐसे परिवारों के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। परिवार टूट जाते हैं, शांति गायब हो जाती है, आर्थिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है, बच्चों की उपेक्षित स्थिति हो जाती है।

**पारिवारिक तनाव का समाज पर प्रभाव—** जब परिवार शांतिपूर्वक, प्रेम सहयोग, सौहार्द के वातावरण को बनाए हुए कार्य करते हैं तो एक समाज का सृजन होता है, एक समाज बनता है जहां साहित्य, कला, विज्ञान सभी प्रगति करते हैं और समाज सुख समृद्धि के लिए ख्याति प्राप्त करता है लेकिन इसके विरोध में जब परिवार तनाव व झगड़ों के केंद्र बन जाते हैं तो वह एक ऐसे समाज को जन्म देते हैं जहां समाज की प्रत्येक इकाई घुटन का अनुभव ही नहीं करती बल्कि अपने अस्तित्व को भी बनाए रखने में असमर्थ रहती है जिससे समाज में उदासीनता, स्वार्थ व राष्ट्रीय संकट पैदा होता है। अतः यदि परिवार रूपी संस्था में तनाव और झगड़ों को समाप्त करने की दिशा में प्रयास नहीं किए गए तो समाजीकरण की स्वस्थ प्रक्रिया पर प्रश्न चिन्ह लग जाएगा जो स्वयं समाज के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह सिद्ध होगा।

**पारिवारिक तनाव को दूर करने के सुझाव—** शैक्षिक आधार पर हमारी शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य भौतिक मूल्य न होकर नैतिक आचरण से निर्देशित होनी चाहिए तथा उच्चतर मानसिक मूल्य की प्राप्ति में सहायक होनी चाहिए, शिक्षा का प्रसार और अभी अधिक होना चाहिए ताकि सभी स्त्री पुरुष शिक्षित होकर अपने जीवन दर्शन तथा दृष्टिकोण में वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तन कर सकें। शिक्षा ही एक ऐसा मंत्र है जो व्यक्ति में ज्ञान का संचार कर विभिन्न प्रकार से सोचने तथा कर्म करने की प्रेरणा देती है।

**वैवाहिक आधार—** परिवार के सभी सदस्यों का कर्तव्य हो जाता है कि विवाह करते समय लड़के-लड़की की रुचियों, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को विशेषतः ध्यान में रखें। परंपराओं एवं आधुनिक मान्यताओं में पाए जाने वाले उन तत्वों को अपनाया जाना चाहिए जो हमारे जीवन की कुंठाओं को निकाल कर अच्छे मंगलमय जीवन की ओर ले जाने में सहायक सिद्ध हो सकती है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करें ताकि परिवार रूपी महत्वपूर्ण संस्था को विघटित होने से बचाने के लिए हम रचनात्मक कार्य कर सकें।

#### संदर्भ ग्रंथ

1. Ahmad Imtiaz, Family Marriage & Kinshi Pulbication Mantor Publishing House New Delhi
2. Core M.S.- Urbanization & Family Change, Popular Prakashn
3. Kapadia K.M. – Marriage & Family in India Bombay Oxford University
4. पारिवारिक समाजशास्त्र – एस.आर. गुप्ता, सीता प्रकाशन, हाथरस